माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 23 मार्च, 2018 को दिल्ली में शहीद भगत सिंह के शहीदी दिवस पर आयोजित 'रंग दे बसंती' कार्यक्रम में दिया गया भाषण।

हरियाणा सरकार में कृषि मंत्री श्री ओम प्रकाश धनखड़ जी, चौ0 रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द के कुलपति डॉ0 राजबीर सिंह सोलंकी जी, राष्ट्रीय सिख संगत के महासचिव श्री अवतार सिंह शास्त्री जी, मुख्यमंत्री हरियाणा के मीडिया सलाहकार श्री अमित आर्य जी, प्रसिद्ध टी.वी अभिनेता श्री सुमित वत्स जी और आज जिस गाथा का मंचन हो रहा है 'राष्ट्र शहीद भगत सिंह' उसके लेखक तथा डायलॉग इनिशिएटिव फाउंडेशन के संस्थापक श्री राकेश योगी जी, पत्रकार एवं छायाकार बन्धुओ तथा इस अवसर पर उपस्थित सभी गणमान्य जन और मेरे युवा साथियो!

राकेश योगी जी और अमित आर्य जी मुझे मिलने के लिए हरियाणा राजभवन में आए थे तो इन दोनों से मैने बातचीत की। शहीद भगत सिंह जी का नाम सुनकर मना तो किया नहीं जा सकता था, क्योंकि वे देश की स्वतंत्रता के लिए जो प्रेरणादायी महानुभाव हुए, वे उन प्रेरणा पुंज में से एक हैं। लेकिन अमित आर्य और राकेश योगी जी को देखकर ऐसा नहीं लग रहा था कि कार्यक्रम इतना अच्छा होगा। मैने दिल्ली में कई कार्यक्रमों में भागीदारी की है। एक दिन में दिल्ली में 50 से 100 तक कार्यक्रम होते हैं। आज तो अन्ना हजारे का आन्दोलन भी रामलीला मैदान में चल रहा है। इसलिए दिल्ली के बारे में ऐसा कहा जाता है कि अगर किसी कार्यक्रम में 100 लोग भी आ जाएं, तो बहुत बड़ी बात है।

दूसरी विशेषता जो मैं देख रहा हूं वह यह है कि यहां सफेद बालों वाले लोग कम हैं और काले वाले ज्यादा हैं। आज देश को जरूरत इन्हीं की है और शहीद भगतसिंह के पदचिह्नों पर चलने की और उनको आगे की पीढियों में ले जाने की जरूरत भी है। इसलिए बड़ा सकारात्मक और उपयोगी कार्यक्रम लग रहा है मुझे।

तीसरी प्रसन्नता मुझे यह है कि यहां सिर्फ बेटे ही नहीं, बेटियां भी काफी संख्या में हैं। जब किसी समाज की, किसी देश की बेटियां अपनी पर उतर आती हैं, तब फिर देश के उत्थान की कोई शंका की गुंजाइश नहीं रहती है।

आज यह शहीदी दिवस, जैसा कि ओम प्रकाश धनखड़ जी कह रहे थे, वास्तव में भावानात्मक दृष्टि से, विचारात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। वास्तव में देश को मजबूत बनाने के लिए शहीद भगत सिंह जी से प्रेरणा लेने की बहुत जरूरत है। ओम प्रकाश धनखड़ जी बहुत सारी बातें कह रहे थे। लेकिन देश 1947 में राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र हुआ था। राजा बदला था। देश में जो 565

राजा थे उनसे दस्तखत करवाकर सरदार वल्लभभाई पटेल ने सब रियासतों का विलीनीकरण भारत में कर दिया था। बस इतना ही काम हुआ था। देश सही में स्वतंत्र नहीं हुआ था। क्योंकि जब देश की स्वतंत्रता होती है तब राजनीतिक नहीं होती, वह वैचारिक भी होती है, वो आईडोलोजिकल भी होती है, वह सांस्कृतिक भी होती है, वह आध्यात्मिक भी होती है और वह अर्थ की दृष्टि से भी स्वालम्बन की होती है। यह सारी स्वतंत्रता हमें प्राप्त करनी थी।

लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि कई चीजों में संयोग रहता है। बिना संयोग के कुछ नहीं होता। यहां तक तो गांव में बड़ी मान्यता है कि लड़के और लड़की की शादी भी बिना संयोग के नहीं होती। आप लाख कोशिश कीजिए। तो यह संयोग की बात थी कि जब 21वीं शताब्दी आई तो देश करवट ले रहा है। सब कह रहे हैं कि हम स्वतंत्रताओं की ओर अग्रसर हो रहे हैं और उसके लिए बहुत बड़ा उदाहरण व प्रेरणा शहीद भगत सिंह हो सकते हैं।

आज हिसार से कुछ नौजवान मुझसे मिलने आए थे, डेपूटेशन लेकर, यहॉ के लिए चलने से पहले 12.00 बजे। वे एक मांग कर रहे थे कि हिसार में अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्ड बन रहा है, उसका नाम शहीद भगत सिंह होना चाहिए। लेकिन वे मांग क्या कर रहे थे मैं इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दे रहा था, मैं इस पर ध्यान दे रहा था कि जितने भी आए थे, 35–40, सभी नौजवान थे। इसलिए मुझे यह देखकर, आकलन करके, विचार करके लग रहा था कि आज का हमारा नौजवान ठीक रास्ते पर जा रहा है। इन नौजवानों को अच्छी सीख देने की हरियाणा में आवश्यकता ज्यादा है क्योंकि जब तक नौजवान तय नहीं करेंगें, तब तक 'हरियाणा एक और हरियाणवी एक', यह नहीं हो पाएगा।

ओम प्रकाश धनखड़ जी ने शहीद भगत सिंह के बारे में बहुत कुछ बोला है। उन पर ज्यादा बोलने की जरूरत इसलिए नहीं है कि डेढ़ घण्टे की जो गाथा है, वह आपके सामने आने वाली है। इसलिए उस पर ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है। बस एक बात जो मैं बोलना चाहता हूॅ कि उनके पिता जी आर्य समाजी थे–बाबा। उनके ग्रेंडफादर भी आर्य समाजी थे। उनकी शिक्षा लाहौर डी0ए0वी0 स्कूल में हुई। आप जानते हैं कि डी0ए0वी0 किसके लिए प्रसिद्व है–स्वामी दयानन्द सरस्वती। इनके बाबा आर्य समाजी थे और पिता जी पूजा–पाठ में विश्वास करते थे, ईश्वर पर विश्वास करते थे और इसलिए उनके रास्ते पर भी चले। लेकिन शहीद भगत सिंह जी ने, उस नौजवान ने जब देश की स्थिति को देखा, तो वे न आर्य समाजी रहे, न वे पूजा–पाठ में विश्वास करने वाले रहे। वे यथार्थवादी बन गए। स्वामी विवेकानन्द जी भी यथार्थवादी थे। इसलिए स्वामी विवेकानन्द जी कर्मयोग को पसन्द करते थे। स्वामी विवेकानन्द जी यह कहते थे कि अगर आपको गीता सीखनी है, गीता समझनी है, गीता का ज्ञान अगर प्राप्त करना है, तो कमरे में बैठ करके गीता की पुस्तक

को पढ़ना, गीता समझ में नहीं आएगी। खेल के मैदान में जाओ और फुटबाल खेलो। खेल के मैदान में जब जाआगे और फुटबाल खेलोगे तक गीता समझ में आएगी। जो आदमी समाज के बारे में नहीं सोचता समाज के बल पर सम्पत्ति कमाने के बाद, समाज का ध्यान नहीं रखता, उससे बड़ा कोई चोर नहीं है। ऐसे यथार्थवादी थे स्वामी विवेकानन्द। इसलिए जब आप यह शहीद गाथा देखेंगे तो आपको ये सब बातें ध्यान में आयेंगी। स्वामी विवेकानन्द जी कहा करते थे कि उठो जागो और तब तक न रूको जब तक तुम्हारा संकल्प पूरा न हो–युवाओं के लिए कहते थे। इस संकल्प को पूरा करने के लिए अपना पूरा जीवन शहीद भगत सिंह ने लगाया है। वे कहीं रूके नहीं, कहीं झुके नहीं, कहीं थके नहीं। देश की स्वतंत्रता के लिए शहीद हो गए।

राकेश योगी जी की मैं बहुत प्रशंसा करता हूं क्योंकि इन्होंने डायलॉग इनिशिएटिव फाउंडेशन की स्थापना की। उसमें ये जो करना चाहते हैं वह इस शहीद की जो गाथा है वह सबको बताना चाहते हैं। आप सब लोग इस राष्ट्र को अपनाएं तभी शहीदी दिवस की मान्यता, उसके प्रति सम्मान, उसके प्रति श्रद्धा अपने अन्तःकरण से प्रकट होगी।

आप सभी का धन्यवाद!